ॐ

❋ संकटमोचन श्रीहनुमान् हवन ❋

॥ ध्यानम्॥

बुद्धिर्बलं यशो धैर्यं निर्भयत्वं अरोगता।

अजाड्यं वाक्पटुत्वं च हनुमत् स्मरणात् भवेत् ॥

आहुति हेतु मंत्र

॥ श्री हनुमान् गायत्री मन्त्र॥

ॐ आञ्जनेयाय विद्महे रामदूताय धीमहि ।

तन्नो हनुमान् प्रचोदयात् स्वाहा इदं न मम॥

॥ संकटमोचन श्रीहनुमान् अष्टकम्॥

बाल समय रबि भक्षि लियो तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।

ताहि सों त्रास भयो जग को यह संकट काहु सों जात न टारो ।

देवन आनि करी बिनती तब छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो ।

को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ।

ॐ श्रीसंकटमोचनाय नमः स्वाहा इदं न मम ॥१॥

बालि की त्रास कपिस बसै गिरि जात महाप्रभु पंथ निहारो ।

चौंकि महा मुनि साप दियो तब चाहिय कौन बिचार बिचारो ।

कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के सोक निवारो ।

को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो

ॐ श्रीसंकटमोचनाय नमः स्वाहा इदं न मम ॥२॥

अंगद के सँग लेन गये सिय खोज कपीस यह बैन उचारो ।

जीवत ना बचिहौ हम सो जु बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय सिया सुधि प्रान उबारो ।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो
ॐ श्रीसंकटमोचनाय नमः स्वाहा इदं न मम ॥३॥

रावन त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो।
चाहत सीय असोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो ।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो
ॐ श्रीसंकटमोचनाय नमः स्वाहा इदं न मम ॥४॥

बान लग्यो उर लछिमन के तब प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो ।
आनि सजीवन हाथ दई तब लछिमन के तुम प्रान उबारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो
ॐ श्रीसंकटमोचनाय नमः स्वाहा इदं न मम ॥५॥

रावन जुद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो ।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट भारो ।
आनि खगेस तबै हनुमान जु बंधन काटि सुत्रास निवारो ।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो
ॐ श्रीसंकटमोचनाय नमः स्वाहा इदं न मम ॥६॥

बंधु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पताल सिधारो ।

देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ।

जाय सहाय भयो तब ही अहिरावन सैन्य समेत सँहारो ।

को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो।

ॐ श्रीसंकटमोचनाय नमः स्वाहा इदं न मम ॥७॥

काज किये बड़ देवन के तुम बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।

कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसों नहिं जात है टारो ।

बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो ।

को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो

ॐ श्रीसंकटमोचनाय नमः स्वाहा इदं न मम ॥८॥

दोहा

लाल देह लाली लसे अरू धरि लाल लँगूर ।

बज्र देह दानव दलन जय जय जय कपि सूर ॥

सियावर रामचन्द्र की जय !

पवनसुत हनुमान की जय !

उमापति महादेव की जय !

बोलो भाई सब संतन की जय !

श्रीसद्गुरुनाथ महाराज की जय !